मेहेर बाबा के साथ ३० दिन में भूमण्डल की परिक्रमा



"मैं प्रेम का महासागर हूँ; मुझसे डरो मत बल्कि मुझसे अधिकाधिक प्रेम करो। प्रेम में भय के लिए स्थान नहीं होता। तुम मुझसे जितना अधिक प्रेम करोगे उतने ही मेरे निकट आते जाओगे।"

—अवतार मेहेरबाबा

मेहेरबाबा के साथ तीस दिन में भूमण्डल की परिक्रमा



जिन लोगों को बाबा से निकटतर सम्पर्क का सुअवसर प्राप्त हो चुका है, वे बाबा द्वारा बहुधा कहे गये शब्दों, "मैं विश्व का स्वामी हूँ और अपने प्रेमियों का दास हूँ", में भरे हुये सत्य का अनुभव करते हैं।

यूरुप, संयुक्तराष्ट्र अमरीका, और आस्ट्रेलिया के कुछ बाबा-प्रेमियों के महान प्रेम ने **प्रेम के प्रभु बाबा** को मजबूर कर दिया कि वह अपने साकार रूपमें उनके बीच पहुँचकर उनको अपना दर्शन देने की उनकी मौन तथा गहरी लालसा को पूरा करें, चाहे वह दर्शन थोड़े ही समय के लिये क्यों न हो।

तदनुसार अपने एकान्तवास के बीच में ही बाबा ने यूरुप, अमरीका और आस्ट्रेलिया के अपने प्रिय प्रेमियों को अपना **'सहवास'** प्रदान करने के लिए १६ जौलाई १९५६ ई० को सतारा, बम्बई स्टेट (भारतवर्ष), से प्रस्थान कर दिया।

सुदूर देशों के अपने प्रेमियों के हृदयों की लालसा को पूरा करने के बाद बाबा, घोर श्रम के साथ पृथ्वी की यात्रा करके ठीक एक महीना पश्चात्, १७ अगस्त १९५६ ई० को सतारा वापिस पहुँच गये, और १५ फ़र्वरी १९५७ ई० तक के लिये अपना एकान्त-वास फिर से प्रारम्भ कर दिया।

पिछले पचीस वर्षों में बाबा ने भारतवर्ष से बाहर अनेक देशों की कई बार यात्रा की है। सुदूर देशों में बाबा का नाम उन लोगों को अपरिचित नहीं है जो सचाई के साथ **सत्य** की खोज में हैं। उनके लिये बाबा **प्रकाश** के मूल हैं और **ईश्वर-साक्षात्कार** के **मार्ग** पर यात्रा के **छोर** हैं।

परन्तु, तीस दिन में भूमण्डल के चारों ओर बाबा की इस तूफ़ानी हवाई यात्रा से बाबा के साथ गये हुये जनों को महसूस हुआ कि बाबा **ईश्वरीय मार्ग** के साधकों के पथप्रदर्शक होने के साथ साथ उससे भी बढ़ कर कुछ थे। बाबा ईश्वर-प्रेमियों के **गोता लगाने वाले प्रियतम** भी थे।

ईश्वरीय प्रेम की उष्णता से प्रज्वलित सैकड़ों हृदय बाबा का सम्पर्क प्राप्त करते ही अनेक ज्वालाओं के रूप में फूट पड़े। दूसरे अनेक लोगों ने, जो उपेक्षा भाव से बाबा के समीप पहुँचे थे, बाबा का सम्पर्क प्राप्त करते ही महसूस किया कि प्रेम की कोई चिनगारी उनके सुप्त हुये हृदयों में उतर रही थी और उनको स्फूर्ति प्रदान कर रही थी।

बाबा ने अपना **'सहवास'** प्रदान करने के लिये जिस देश में भी पदार्पण किया, वहाँ बाबा के निकट और चारों ओर प्रेम का सहज (spontaneous) विस्फोट हो गया था।

असहनीय वियोग के लम्बे समय के बाद जिस समय प्रेमीजन हवाई जहाज़ के अड्डों पर या बाबा के कमरों में बाबा से मिलते थे, उस समय उनके प्रेम के प्रदर्शन चित्र-विचित्र होते थे।

कुछ प्रेमी अपने **दैवी प्रियतम बाबा** के भौतिक शरीर का स्पर्श करते तथा उसका दुलार करते थे मानो वे यह निश्चय कर रहे हों कि जो वे देख रहे थे वह स्वप्न नहीं था वरन् बाबा के प्रति

उनके गहरे प्रेम की पूर्ति थी जो बाबा को हज़ारों मील की दूरी से खींच कर उनके बीच में ले गई थी। कुछ प्रेमी अत्यधिक हर्ष तथा आनन्द के कारण आँसू बहाते थे; कुछ लोग बाबा के सामने घुटने टेक कर मौन पूजा में उनको टकटकी लगाकर देखते थे; कुछ जन भाव के वेग से घबड़ा कर बाबा के समीप खामोश खड़े हुए आनन्द के आँसुओं की धारें बहाते थे; कुछ प्रेमी बहुत प्रसन्न तथा आनन्दित होते थे जिस प्रकार बच्चे अपनी आवश्यकताओं के पूरे होने पर प्रफुल्लित होते हैं; कुछ लोग बारम्बार पूछते थे, "बाबा, यह सब यथार्थ है या एक स्वप्न है ?" अन्य ऐसे भी लोग थे जो अपने हर्ष को अपने अन्तस्तल में न रख सकते थे और जो बहुधा बाबा का आलिङ्गन करना चाहते थे। और, **दैवी प्रियतम** क्या करते थे ? वह प्रेमियों के समस्त आनन्द, उनकी सिसकियों तथा उनके हृदयों की धड़कनों के बीच मौन बने रहते थे। अपने मौन में, जिसमें बाबा सदैव पूजनीय होते हैं और जिसमें वह प्रायः आनन्दित पाये जाते हैं, बाबा ने अपने प्रेमियों के प्रेम को ग्रहण किया और उनके लिये अपने प्रेम को उनके अन्तर में अधिक शक्ति के साथ मुक्त किया। बाबा बहुधा संकेतों के द्वारा प्रकट करते थे कि उन लोगों के बीच में बाबा को बहुत आनन्द प्राप्त होता था। यदि बाबा किसी प्रेमी को अपना आलिङ्गन प्रदान करना चूक जाते थे, तो वह उसके सिर या कन्धे पर अपने हाथ से प्रेम की थपकी अवश्य देते थे।

पूरे एक माह तक दिन प्रतिदिन यही दृश्य रहा। हाँ, विभिन्न महासागरों को पार करके विभिन्न महाद्वीपों में बाबा के पहुँचने से विभिन्न जातियों तथा देशों के विभिन्न प्रेमियों की ही भिन्नता इस रोज़ रोज़ के दृश्य में नज़र आती थी। **सनातन पुरुष** बाबा तो इस दृश्य के बीच में वही एक शाश्वत **दैवी प्रियतम** बने रहते थे,

जिनसे प्रेम तथा जिनकी सेवा करने की लालसा हजारों लोग करते थे। बाबा के चारों ओर इतना अधिक प्रेम-प्लावित वातावरण रहता था कि किसी प्रेमी की ओर उनकी एक प्रेमभरी चितवन ही उसके हृदय में वह सबकुछ भर देने के लिए काफ़ी होती थी जिसकी अभिलाषा वह कर सकता था।

बाबा की तीस दिन की हवाई यात्रा के विवरण की पूरी सूची पाठकों की जानकारी के लिए इस वृत्तान्त के अन्त में दी गई है। संयोगवश, पाठकों के लिये यह जानकारी भी दिलचस्प होगी कि लगभग बीस वर्ष पहले बाबा ने अपनी पश्चिमीय देशों की यात्रा के सम्बन्ध में एक सरसरी बात कही थी। बाबा ने उस समय कहा था कि एक ऐसा समय आवेगा जब उनको पृथ्वी के विभिन्न भागों में अपने प्रेमियों से मिलने के लिये सुदूर देशों की यात्रा सीमित समय के भीतर करना पड़ेगी। उन्होंने यह भी कहा था कि इन यात्राओं में वह रात को किसी महाद्वीप में विश्राम करेंगे तो दूसरे दिन दूसरे महाद्वीप में, और एक देश में वह नाश्ता करेंगे तो दूसरे में भोजन करेंगे और तीसरे में तीसरे पहर की चाय पियेंगे, इत्यादि। मण्डली के चार जनों ने, जो इस बार बाबा के साथ गये थे, देखा और अनुभव किया कि लगभग बीस वर्ष पूर्व कही गई बाबा की उस सरसरी बात के शब्द कितने सत्य थे।

पृथ्वी के विभिन्न भागों में अपने अनुयायियों को देखने तथा उनसे मिलने, और इङ्गलैण्ड, न्यूयार्क, मिरटिल बीच केन्द्र, वाशिङ्गटन, लॉस ऐन्जेलस, मेहेर माउन्ट (ओजाई), सैन फ्रांसिसको, सिडनी व मेलबोर्न में प्रेमी-वर्ग को अपना **'सहवास'** प्रदान करने के अतिरिक्त, बाबा प्रेस, टेलीविज़न और रेडियो ब्राडकास्टिङ्ग कारपोरेशनों के प्रतिनिधियों से मिलने में भी व्यस्त रहे थे। बाबा ऐसी मौज में प्रतीत होते थे मानो वह प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करना चाहते थे जो उनके पास पहुँचता था।

चाहे मनुष्य प्रेमवश या कौतूहलवश, सत्य की सच्ची खोज के लिये या समाचार प्राप्त करने के लिये, बाबा के पास पहुँचते थे, उनमेंसे प्रत्येक जन बाबा का सम्पर्क प्राप्त करके सन्तुष्ट तथा आनन्दित होता था।

ईश्वर का प्रेमी बाबा के प्रेम की प्रचण्ड टक्कर महसूस करता था; दार्शनिक बाबा की बुद्धिमत्ता को स्वीकार करता था और श्रद्धाभाव से भर जाता था; वैज्ञानिक, मानसशास्त्री, डाक्टर अथवा प्रोफ़ेसर एक बार बाबा के समीप पहुँचते ही उनसे प्रेम करने के लिये विवश हो जाते थे। **अपार बाबा** का सामना होने पर वे सब अपनी परिमितताओं को महसूस करते थे और सब उस प्रेम की शक्ति को महसूस करते थे जो **प्रेम के अपार महासागर** से निकल कर फैल रहा था।

यात्रा के इन तीस दिनों में बाबा ने कई सन्देश दिये थे; और आशा है कि वे सब कालान्तर में एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किये जायँगे।

पूरे भ्रमण के दौरान में बाबा से अनेक दिलचस्प तथा चतुराई से भरे हुये प्रश्न किये गये थे। उनमें से कुछ अत्यन्त दिलचस्प प्रश्न और बाबा द्वारा दिये गये उनके उत्तर नीचे दिये जाते हैं:—

प्रश्न—क्या मनुष्य के लिये **सत्य** तक पहुँचना सम्भव है?

उत्तर—हाँ। और, यह किस प्रकार सम्भव है इसका उत्तर एक वाक्य में दिया जासकता है, अथवा किताबें की किताबें भी इसके उत्तर के लिये काफ़ी न होंगीं। मैं एक वाक्य में इसका उत्तर दूँगा: **सत्य** को प्राप्त करने के लिये मिथ्या का त्याग कर दो। परन्तु मिथ्यापन क्या है? तुम्हारा यह कहना सही है कि जो चीज़ टिकने वाली नहीं है वह मिथ्या है। इस-

लिये उस सबकुछ का त्याग कर दो जो स्थायी नहीं है और तब तुम्हें **सत्य** का अनुभव हो जायगा।

प्रश्न—परन्तु क्या आत्मा (Self) का कोई भाग ऐसा है जो अनश्वर है ?

उत्तर—हाँ। (बाबा ने प्रश्न करने वाले की ओर इशारा करते हुये कहा) केवल **तुम** अनश्वर हो, और तुम्हारी आत्मा का शेष सब हट जाना चाहिए जिससे तुम अपने यथार्थ **आत्म** का साक्षात्कार कर सको जो **तुम** हो।

प्रश्न—बाबा, सारी दुनियाँ में तुम्हारे कितने अनुयायी हैं ?

उत्तर—क्या तुम अपने सिर के बालों की गिनती करना चाहोगे ?

प्रश्न—बाबा, आप ईश्वर हैं और आप सबकुछ जानते हैं, और फिर भी आप मुझसे बहुधा क्यों पूछा करते हैं कि क्या मैं आपसे प्रेम करता हूँ ? निस्सन्देह मैं आपसे बहुत प्रेम करता हूँ।

उत्तर—मुझको अपने प्रेमियों से यह सुनकर आनन्द मिलता है कि वे मुझसे प्रेम करते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि मैं सबकुछ जानता हूँ, फिर भी मैं उनसे पूछता हूँ। मुझको आनन्द प्राप्त होता है जिस समय मेरा प्रेमी कहता है, "बाबा, मैं आपसे बहुत प्रेम करता हूँ।" उदाहरण के लिये, दैनिक जीवन में हमको एक दूसरे से बहुत प्रेम करने वाले पति-पत्नी का जोड़ा मिलता है। उनमें से प्रत्येक दूसरे से बहुत प्रेम करता है और इस बात को जानता है, फिर भी पति अथवा पत्नी बहुधा पूछ बैठते हैं, "प्राणप्रिय, क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो ?" निश्चय ही इस प्रश्न का उत्तर मिलेगा "मेरा तुम पर बहुत प्रेम है।"......इसी प्रकार मुझको अपने प्रेमियों से पूछने में खुशी होती है और बारम्बार उनका यह

उत्तर सुनने में आनन्द मिलता है कि, "बाबा, मैं आपसे बहुत प्रेम करता हूँ।"

प्रश्न—ईश्वर के **अपार प्रेम** तथा उसकी **अपार कृपा** के होते हुये भी दुनियाँ में लगातार विपदा क्यों बनी रहती है ?

उत्तर—सबमें **शाश्वत आनन्द** का उद्गम **आत्मा** है और सबकी स्वार्थपरता निरन्तर क्लेश का कारण है। जब तक स्वार्थपूर्ण कार्यों द्वारा सन्तोष प्राप्त किया जायगा, तब तक सदैव विपदा रहेगी। केवल **अपार प्रेम** तथा **कृपा** के कारण ही मनुष्य, पृथ्वी पर क्लेश की शिक्षाओं के द्वारा, यह अनुभव करना सीख सकता है कि उसमें **अपार आनन्द** का मूल स्वाभाविक रूपसे विद्यमान है और समस्त क्लेश उसकी **अपार आत्मा** का पर्दा हटाने के लिये उसका प्रेम का दर्द है।

इसके अतिरिक्त बाबा ने प्रेस के द्वारा आम जनता के लिये सन्देश दिये थे। प्रेस-सम्मेलन के बीच में बाबा ने सहजतया जो सन्देश दिए थे उनमें से दो अत्यन्त अनोखे सन्देश नीचे दिये जाते हैं जहाँ तक वे याद आसके हैं :—

(१) "दार्शनिक, नास्तिक तथा अन्य लोग चाहे ईश्वर के अस्तित्त्व का समर्थन करें अथवा उसका खण्डन करें, परन्तु जब तक वे अपने ही अस्तित्त्व को अस्वीकार नहीं करते तब तक वे ईश्वर में अपने विश्वास की साक्षी देते हैं, क्योंकि मैं ईश्वरीय प्रभुत्त्व से तुमको बतलाता हूँ कि **ईश्वर शाश्वत तथा अपार अस्तित्त्व है**। वह सर्वस्व है।

"मनुष्य के लिये जीवन में केवल एक लक्ष्य है और वह है ईश्वर से अपनी एकता प्राप्त करना।"

(२) "मेरे पास केवल एक सन्देश देने के लिये है और मैं युग युगान्तर में वही सन्देश बारम्बार देता हूँ ।

"सबके लिये मेरा सन्देश है : 'ईश्वर से प्रेम करो' ।

"मनुष्य को पूरी सच्चाई के साथ ईश्वर से इस हद तक प्रेम करना चाहिए कि वह प्रेम में पूर्णतया खो जाय ।

"और, कोई ईश्वर से कैसे प्रेम कर सकता है ?

"मनुष्य दूसरों को आनन्द देने की भरसक कोशिश करने के द्वारा, चाहे इसमें उसको अपने आनन्द का भी त्याग करना पड़े, ईश्वर से ऐसा प्रेम कर सकता है जैसा उससे करना चाहिये ।"

इस यात्रा में बाबा बहुधा जनता, प्रेस तथा अपने अनुयायियों के सामने, जो किसी हॉल (विशाल कमरा) में उनके सन्देश सुनने के लिये जमा होते थे, अपने **ईश्वरत्व** को दृढ़ निश्चयपूर्वक प्रकट करते थे। अपने इशारों के द्वारा वह कहते थे :

"मैं विश्व का **स्वामी** हूँ।"

"मैं वही हूँ जिसकी प्रतीक्षा मानव-समाज उत्सुकता से कर रहा है।"

"मैं वही हूँ जिसके आने की आशा की जाती रही है ।"

"मैं **प्रेम का महासागर** हूँ; मुझसे डरो मत बल्कि मुझसे अधिकाधिक प्रेम करो । प्रेम में भय के लिये स्थान नहीं होता। तुम मुझसे जितना अधिक प्रेम करोगे उतने ही मेरे निकट आते जाओगे ।"

"मैं विश्व का **स्वामी** हूँ और अपने प्रेमियों का दास हूँ ।"

"मैं और ईश्वर **एक** हैं।"

"यह सबकुछ जो तुम देखते हो मेरी सृष्टि है ।"

"समस्त सृष्टि की उत्पत्ति मुझसे हुई है ।"

न्यूयार्क में और सैन फ्रान्सिसको में बाबा का अभिनन्दन करने के लिए विधिवत् भोजों का प्रबन्ध किया गया था। पाठकों को यह जानने में बहुत दिलचस्पी होगी कि बाबा ने अमरीका में अपने प्रेमियों द्वारा किये गये अत्यन्त हृदयस्पर्शी स्वागत अभिनन्दनों के प्रत्युत्तर में अपने प्रिय प्रेमियों को क्या कहा था। बाबा का प्रत्युत्तर शब्दशः नीचे दिया जाता है :—

"आज मुझको तुम सबके बीच मौजूद होने में बहुत आनन्द हो रहा है।

"तुम्हारी भक्ति ही मुझको मेरे एकान्तवास की अवधि में पश्चिमीय देशों में खींच लाई है।

"मेरे विश्वव्यापी हृदय को यदि कोई वस्तु कभी प्रभावित करती है तो वह प्रेम है।

"तुम सबके पास प्रेम का सीमारहित तथा तटविहीन **दैवी महासागर** लाने के लिये ही मैं सीमित सान्सारिक महासागरों को पार करके आया हूँ।

"जो लोग मुझसे प्रेम करने का साहस नहीं करते वे किनारों पर आश्रय ढूँढ़ते हैं। तुम लोग, जो मुझसे प्रेम करते रहे हो, इस **ईश्वरीय महासागर** में तैर रहे हो। मुझसे अधिकाधिक प्रेम करो यहाँ तक कि तुम मुझमें निमग्न हो जाओ। गहरा गोता लगाओ और तुम **अपार एकता** का अमूल्य मोती पाजाओगे।"

बाबा की इस भूमण्डल की यात्रा के दौरान में अनेक आध्यात्मिक शिक्षक तथा नेता अपने कुछ अनुयायियों सहित बाबा के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए आये थे, और कुछ धार्मिक संस्थाओं के अध्यक्ष भी आये थे जिनके खुद भारी संख्या में अनुयायी हैं। वहाँ सन्त कृपालसिंह तथा स्वामी शिवानन्द के अनुयायी भी बाबा के पास आये थे। बाबा उन सबसे प्रेमपूर्वक

मिले और उनको अपने प्रेम का आशीर्वाद दिया। प्रशंसकों की भारी भीड़ में दो एक लोग ऐसे भी थे जो बाबा का विरोध करने का सङ्कल्प करके बाबा के पास आये थे; और यह आश्चर्यकी बात नहीं थी कि वे लोग बाबा से मिलने के बाद गहरी समझ तथा प्रशंसा के साथ वहाँ से विदा हुये थे।

इस यात्रा में बाबा के साथ गये हुये मण्डली के चार जनों ने बाबा के ईश्वरीय मछलिहारे के रूप की कुछ स्पष्ट झलकें देखीं, जिसने इस बार अपना जाल ठीक महासागरों के पार फैला दिया था और अपने शिकार को मज़बूती तथा चतुरता से **अपने ईश्वरीय हृदय** के निकट खींच लिया था। उस जाल में फँसी हुई हर प्रकार की मछली राज़ी थी और उसको छटपटाने के लिए कोई कारण ही न था, क्योंकि अपनी जाति की शेष मछलियों के विपरीत उसको प्राप्त हो गया था अपना घर और मिल गई थी शान्ति।

इस यात्रा के लेखा में, चाहे वह कितना ही गहरा क्यों न हो, यदि प्रेमियों के उस घोर परिश्रम का उल्लेख न किया जायगा जो उन्होंने **वर्तमान युग के अवतार** के स्वागत के उपयुक्त विस्तृत तैयारियाँ करने में किया था, तो वह अन्धे आदमी को हुए अनुभव के समान होगा।

प्रियतम तथा उनके साथ के चार जनों के आराम के लिये हर सूक्ष्म प्रवन्ध का अतिसावधानी के साथ ध्यान रक्खा गया था और अधिक से अधिक आराम पहुँचाने की दृष्टि से उनकी बारम्बार जाँच की जाती थी। जहाँ **प्रियतम** की आवश्यकताओं तथा सुविधाओं का प्रश्न होता था वहाँ कोई भी प्रबन्ध महत्वहीन न समझा जाता था। बाबा की शय्या की हर वस्तु, उनके शृङ्गार करने के कमरा की अतिरिक्त आवश्यकताओं, बाबा नाश्ता और भोजन में सबसे अधिक कौन सी चीज़ पसन्द

करेंगे और बाबा अपनी सेवा करने वाले जनों के फूलों से विशेषरूप से सजे हुये होने पर कैसे प्रमुदित तथा आनन्दित होंगे, इस सबका ध्यान ऐसी फिक्र तथा ऐसे प्रेम के साथ रक्खा जाता था जैसा कि सच्चे प्रेमी मानवरूप में विद्यमान साकार ईश्वर के प्रति ही रख सकते थे।

प्रियतम के व्यक्तिगत आरामों के लिये अधिक से अधिक सावधानी तथा चिन्ता के अतिरिक्त, बीसों ऐसी बातें थीं जो महत्व पूर्ण थीं और जिनके लिये तात्कालिक ध्यान तथा तात्कालिक पूर्ति की आवश्यकता थी। सम्मेलन के भवन सजाए जाने थे, गड़बड़ी बचाने के लिये निश्चित कार्यक्रम तथा मुलाकातें समय के अनुसार की जानी थीं, कम से कम पचास लोगों के लिये जो बाबा के पीछे पीछे न्यू यार्क से लेकर सैन फ्रान्सिसको तक महाद्वीप के आरपार जा रहे थे सड़क पर चलने वाली गाड़ियाँ तथा हवाई यात्रा के टिकट लगातार सुरक्षित और निश्चित करना थे, बाबा की टोली में सम्मिलित होने वाले हर व्यक्तिगत प्रेमी से किराया इकट्ठा किया जाना था और बाबा के ठहरने के हर स्थान में उन लोगों के ठहरने का प्रबन्ध करना था।

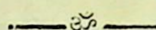
जिस विधि से ये प्रबन्ध, तथा अनेक और प्रबन्ध, सहूलियत के साथ, किसी भी सम्बन्धित जन को लेशमात्र असुविधा पहुँचाये बग़ैर, पूरे किए गए थे, उसकी नाप का सबसे अच्छा फ़ैसला पाठक ही कर सकते हैं। बाबा के इस तीस दिन के पृथ्वी के भ्रमण को इतना सुखदायी और इतना सफल बनाने के लिए जितना कि वह सिद्ध हुआ, सब स्थानों की विविधि स्वागत-समितियों के हर स्त्री-पुरुष ने अपना कर्तव्य अत्यन्त सुन्दरतापूर्वक अवश्य पूरा किया होगा।

बाबा के प्रेमी धन्य हैं जिनको बाबा का प्रचुर **प्रेम** प्राप्त है

क्योंकि वे लाभ अथवा प्रतिफल पाने का कोई विचार न रखते हुए प्रेम के अपने दर्द में आनन्द मनाते हैं।

मेहेर पब्लिकेशन्स,
किंग्सरोड, अहमदनगर
बम्बई राज्य, भारतवर्ष।

आदि के० ईरानी



मेहेरबाबा टोली की यात्रा-सूची

सोमवार, १६ जौलाई—बम्बई से ११-५५ बजे रात को 'एयर इन्डिया टूरिस्ट फ्लाईट १०३' हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान। दूसरे दिन तीसरे पहर ज्यूरिच, स्विटजरलैण्ड, में ५० मिनट का विश्राम।

मङ्गलवार, १७ जौलाई—७-४५ बजे शामको लन्दन पहुँचना।

बुधवार, १८ जौलाई
गुरुवार, १९ ,,
} २ दिन लन्दन में।

गुरुवार, १९ जौलाई—लन्दन से ९-३० बजे रातको 'पैन अमेरिकन टूरिस्ट फ्लाईट ७१' हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान।

शुक्रवार, २० जौलाई—सुबह ६-४० बजे न्यूयार्क पहुँचना।

शुक्रवार, २० जौलाई
शनिवार, २१ ,,
इतवार २२ ,,
सोमवार २३ ,,
} न्यूयार्क में ४ दिन।
ठहरने का स्थान—डेलमोनिको होटल ५९ वाँ और पार्क अवेन्यू।

मङ्गलवार, २४ जौलाई—न्यू यार्क हवाई अड्डा से ७-४५ बजे प्रातः 'नेशनल फ्लाईट फर्स्ट क्लास ३६१' वायुयान द्वारा प्रस्थान (सत्कार स्वरूप जलपान कराया गया)।

विलमिङ्गटन, उत्तरी कैरोलिना राज्य, में १०–३७ बजे सुबह पहुँचना।

(भारतीय टोली कार द्वारा विलमिङ्गटन में मिली और मिरटिल बीच ले जाई गई)। न्यू यार्क टोली के लिये विलमिङ्गटन से मिरटिल बीच (७१ मील) के लिए बस का प्रबन्ध होना था (अन्यथा 'पीडमान्ट फ़्लाईट ५७ फ़र्स्ट क्लास' वायुयान द्वारा १–५ बजे दिन को विलमिंगटन से प्रस्थान और १–४१ बजे दिन को मिरटिल बीच पहुँचना)।

मङ्गलवार,	२४ जौलाई	५½ दिन मिरटिल बीच में।
बुधवार,	२५ ,,	
गुरुवार,	२६ ,,	
शुक्रवार,	२७ ,,	
शनिवार,	२८ ,,	
इतवार,	२९ ,,	

सोमवार, ३० जौलाई— बस अथवा मोटर कारों द्वारा मिरटिल बीच से प्रस्थान, ७१ मील की यात्रा करके विलमिङ्गटन, उत्तरी कैरोलिना, पहुँचना।

विलमिंगटन से १-१० बजे दिनको 'नेशनल फ़र्स्ट क्लास फ़्लाईट ३२०' वायुयान द्वारा प्रस्थान (सत्कार स्वरूप भोजन कराया गया)।

४·३५ बजे दिन को वाशिङ्गटन, कोलम्बिया राज्य का ज़िला, पहुँचना।

(न्यू यार्क की टोली ने इस वायुयान पर यात्रा जारी रक्खी, ५-०० बजे शामको वाशिङ्गटन से उनका प्रस्थान और ६-३६ बजे शामको आईडिलवाइल्ड हवाई अड्डे, न्यूयार्क, पर पहुँचना)।

वाशिङ्गटन, कोलम्बिया राज्य, से १०-२० बजे रात को 'अमेरिकन टूरिस्ट फ़्लाईट ६५५' हवाई जहाज़ द्वारा प्रस्थान (नाममात्र को भोजन ख़रीदा जा सकता था)।

मङ्गलवार, ३१ जौलाई—लास ऐन्जेल्स-अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर ५-५० बजे सुबह पहुँचना।

मङ्गलवार, ३१ जौलाई बुधवार, १ अगस्त गुरुवार, २ "	लास ऐन्जेल्स—हालीवुड—में (ठहरने का स्थान हालीवुड रूज़वेल्ट होटल)। २ अगस्त को आजाई, कैलिफ़ोर्निया (मेहेर माउन्ट) ८५ मील मोटरकार से गये और उसी दिन लौट आये।

शुक्रवार, ३ अगस्त—लास ऐन्जेल्स से ०६-०० बजे आधी रात को 'यूनाईटेड टूरिस्ट फ्लाईट ४६५' (बीच में न रुकने वाला) वायुयान द्वारा प्रस्थान। ११ बजे दिन को सैन फ्रान्सिसको पहुँचना।

शुक्रवार, ३ अगस्त शनिवार, ४ " इतवार ५ " सोमवार ६ "	सैन फ्रान्सिसको में। (ठहरने का स्थान : हालीडे लाज, वान नेस अवेन्यू, वाशिङ्गटन)।

मङ्गलवार, ७ अगस्त—भारतीय टोली का सैन फ्रान्सिसको से ११-०० बजे दिन को 'पैन अमेरिकन टूरिस्ट ८४१' वायुयान द्वारा प्रस्थान। होनोलूलू पहुँचना, ५-१५ बजे शामको। होनोलूलू से ८-४५ बजे रात को 'पैन अमेरिकन टूरिस्ट ८४१' द्वारा प्रस्थान।

International Date Line (अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा)❋

गुरुवार, ९ अगस्त—सिडनी, आस्ट्रेलिया, पहुँचना—३-४५ बजे शाम को।

❋ इन्टरनेशनल डेट लाइन—यह एक काल्पनिक सीमा रेखा

गुरुवार, ९ अगस्त		
शुक्रवार, १० ,,		
शनिवार, ११ ,,		सिडनी में।
इतवार, १२ ,,		
सोमवार, १३ ,,		
मंगलवार १४ ,,		

मंगलवार, १४ अगस्त—सिडनी से १०–३० बजे रात को 'ई एम–५३५' हवाई जहाज़ द्वारा प्रस्थान।

बुधवार, १५ अगस्त—सिङ्गापुर (रात को विश्राम)।

गुरुवार, १६ अगस्त—६–४५ बजे शाम को बम्बई पहुंचना।

बाबा अपनी टोली सहित १७ अगस्त को १–०० बजे दिन के समय बम्बई पहुँचे, क्योंकि स्वेज़ नहर के झगड़े के कारण बाबा का हवाई जहाज़ कोलम्बो (लङ्का) में २० घन्टे तक रोक रक्खा गया था।

है। जब वायुयान इस रेखा को पश्चिम की ओर जाते हुए पार करता है तो उसको पार करते ही उसके समय में दो दिन की बढ़ती मान ली जाती है और यदि पूर्व दिशा को आते हुये उस सीमा को पार करता है तो दो दिन की कमी मान ली जाती है। इस प्रकार यदि कोई वायुयान ५ तारीख़ को उसे पश्चिम की ओर जाते हुये पार करता है तो रेखा के उस पार ७ तारीख़ हो जायगी, और यदि पूर्व की ओर आते हुये पार करता है तो रेखा के इस पार आते ही उसकी तारीख़ ३ हो जायगी।

आज्ञानुसार मूल अँग्रेज़ी वर्णन से अनुवादित तथा प्रकाशित।

मेहेर ब्रह्म-परिवार केन्द्र,
हमीरपुर (उत्तरप्रदेश)।

—केशव नारायण निगम

सितम्बर १९५६ ई०

नारायण प्रेस, हमीरपुर, (उत्तरप्रदेश)।